

हरा कद्दा

नार्थ कैरोलिना की एक लोककथा



‘कभी भी कद्दू को पकने से पहले मत तोड़ो, नहीं तो एक भूत की तरह वह कद्दू तुम्हारे पीछे पड़ जाएगा.’ - ऐसी कहावत लोगों के बीच प्रचलित है.

लेकिन एक बूढ़ी औरत को एक कद्दू-कलछे की बहुत ज़रूरत है और ऐसे अंधविश्वासों को वह मानती ही नहीं है. परन्तु जब वह एक कच्चे कद्दू को तोड़कर घर ले आती है तो वह कद्दू नार्थ कैरोलिना की पहाड़ियों से भी बड़ा उपद्रव मचा देता है.

अमरीका की इस लोककथा को सी. डब्ल्यू. हंटर ने एक सुंदर ढंग से कहा है. यह कथा एक ऐसे उत्पाती कद्दू की है जो तेंदुए से भी अधिक तगड़ा है और लोमड़ी से अधिक चालाक. लेकिन क्या वह एक लड़के से अधिक होशियार है?

सी. डब्ल्यू. हंटर ने इस रोचक कहानी को आर. एम. वार्ड की रचनाओं में पहली बार पढ़ा था. वार्ड ने यह कहानी अपने अस्सी वर्षीय दादा, हर्मन, से सन 1810 के आसपास सुनी थी. हर्मन ने इस कहानी को अपने दादा से सुना था और उन्होंने बताया था कि यह कहानी उन्होंने उन लोगों से सुनी थी जो अमरीका में बसने के लिए सबसे पहले आये थे.

पर संभव है कि यह कहानी उससे भी पुरानी हो. नार्थ कैरोलिना विश्वविद्यालय के डॉक्टर चार्ल्स जुग का कहना है कि अमरीका के मूल निवासियों की लोककथा 'नाराज़ लुढ़कने-वाला पत्थर' 'हरे कद्दू' की कहानी से मिलती-जुलती है. उस लोककथा में भी एक निर्जीव वस्तु जीवित हो कर खूब उपद्रव मचाती है.

कोई नहीं जानता कि इन दोनों कहानियों में कितना सीधा सम्बंध है पर "हरे कद्दू" की रोचक कहानी आप को खूब गुदगुदायेगी.





हरा कद्दू

नार्थ कैरोलिना की एक लोककथा





बहुत समय पहले की बात है. एक नदी के पार, एक पहाड़ी के
ऊपर एक बूढ़ी औरत रहती थी.



एक दिन नदी किनारे वह कदू-कलछे से पानी निकाल कर अपनी बाल्टी भर रही थी. अचानक उसका कलछा नदी में गिर गया.

वह 'हे प्रभु' भी न चिल्ला पाई कि कलछा नदी की तेज़ धारा में बह गया.



अब उसके पास कोई और कलछा न था. इस कारण एक कलछे की ज़रूरत एकदम आ पड़ी.

उसके घर के पास कहुओं की एक बेल लगी थी. वह सीधी बेल के पास आई.



बेल पर बहुत सारे हरे, चिकने कद्दू लगे थे, वैसे ही जैसे क्रिसमस पेड़ पर सुंदर-सुंदर खिलौने लगे होते हैं.

लेकिन एक भी कद्दू पका न था, सब-के-सब कच्चे थे.



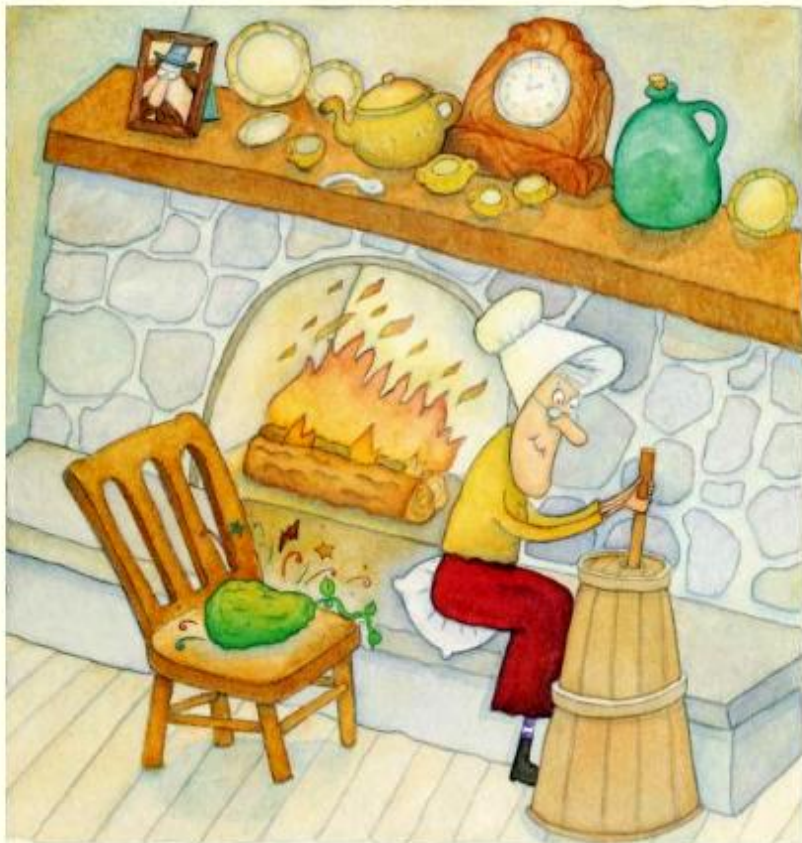
अब उस प्रदेश में एक कहावत प्रचलित थी, 'कभी भी कद्दू को पकने से पहले मत तोड़ो, नहीं तो एक भूत की तरह वह कद्दू तुम्हारे पीछे पड़ जाएगा.' पर उस बूढ़ी औरत ने इस कहावत की कोई परवाह न की; ऐसे अंधविश्वासों को वह मानती ही न थी. उसे तो बस एक कद्दू चाहिए था, कलछा बनाने के लिए, और वह भी तुरंत.



उसने झटका देकर बेल से एक बड़ा हरा कद्दू तोड़ लिया.
उस कद्दू को अपने घर ले आई. कद्दू को सुखाने के लिए अँगूठी के
पास एक कुर्सी के ऊपर उसे रख दिया.

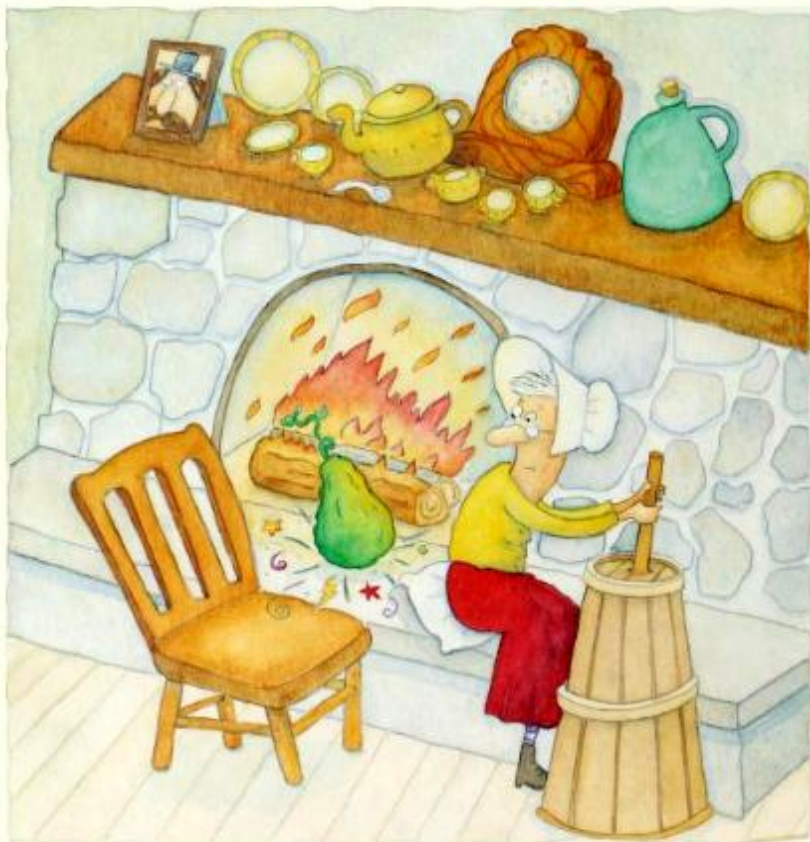
फिर वह मक्खन बिलोने बैठ गयी. वही मक्खन वो शाम के समय रोटी पर लगा कर खाने वाली थी.

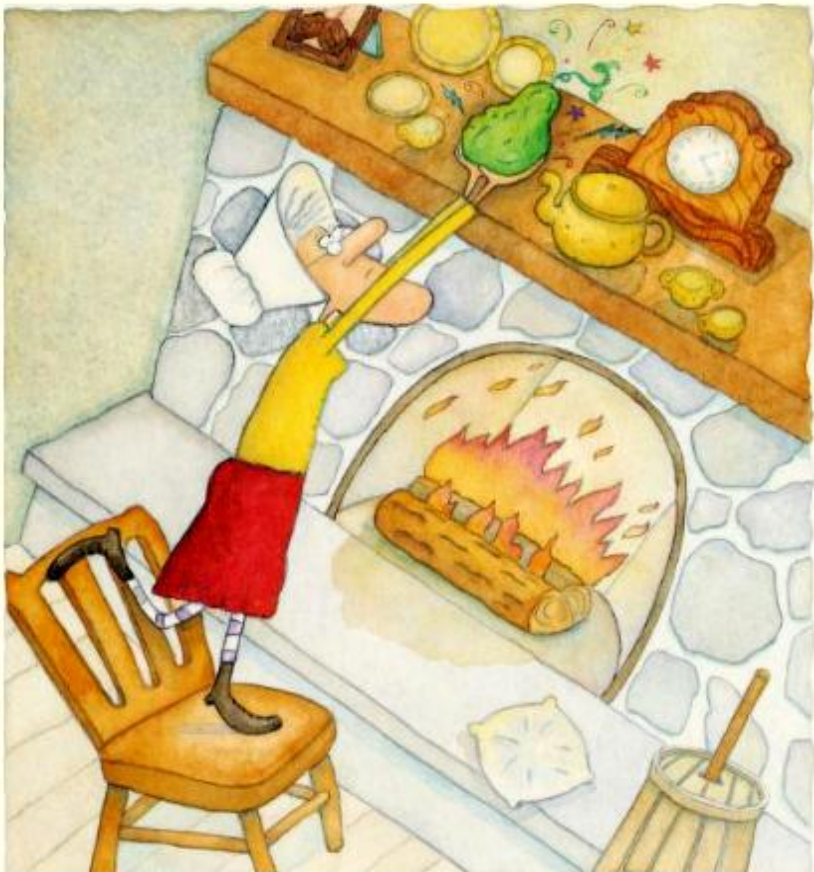
कमरे में पूरी खामोशी थी, सिर्फ मक्खन बिलोने की आवाज़ आ रही थी.



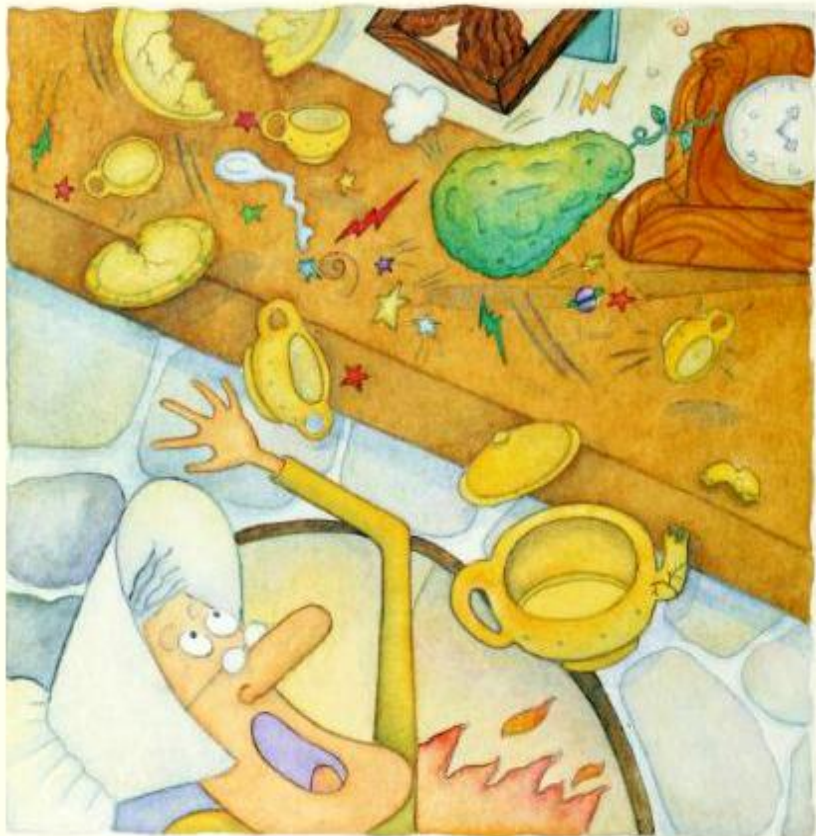
तभी घरघरघर की आवाज़ हुई और कद्दू लुढ़क कर धमम्म से नीचे अँगीठी के पास आ गिरा.

बूढ़ी औरत ने कद्दू को उठा कर फिर से कुर्सी पर रख दिया. फिर से घरघरघर की आवाज़ हुई और कद्दू फिर से लुढ़क कर नीचे आ गिरा.





“अगर तुम कुर्सी पर आराम से नहीं बैठ सकते तो इस मेंटलपीस पर बैठ जाओ.” बूढ़ी औरत ने कहा और कद्दू को उठा कर अँगीठी के ऊपर बने मेंटलपीस पर रख दिया.



पर जैसे ही वह मक्खन बिलोने बैठी, हरा कद्दू मेंटलपीस पर घड़घड़ाहट के साथ इधर-उधर लुढ़कने लगा. मेंटलपीस पर रखी चीज़ों को यहाँ-वहाँ धकेलने में उसे मज़ा आ रहा था.



फिर कद् कूद कर बूढ़ी औरत की ओर आया.
वह उसके सिर पर उछलने लगा, एक, दो, तीन.....



डर के मारे औरत ऐसे उछली कि पूछो मत. वह कूद कर घर के बाहर आ गई और चीखते-चिल्लाते रास्ते पर दौड़ने लगी. हरा कदू भी तेज़ी से उसके पीछे दौड़ा आया. बूढ़ी औरत की पिटाई करने की वह पूरी कोशिश कर रहा था.

भागते-भागते बूढ़ी औरत एक तेंदुए के घर के निकट पहुँच गई.



“क्या बात है? ऐसे क्यों भाग रही हो?” तेंदुए ने पूछा.

“हे भगवान,” वह चिल्लाई, “एक हरा कद्दू भूत की तरह मेरे पीछे पड़ा हुआ है. वह मुझे पीट रहा है.”

“भीतर आ जाओ,” तेंदुए ने कहा, “मैं उस कद्दू से निपट लूँगा.”



कूदती-भागती वह औरत अंदर आ गई और छिप गई.
हरा कद्दू भी उसके पीछे-पीछे अंदर आ गया.

जब तेंदुआ उस पर झपटा तो उसने तेंदुए की ठुकाई कर दी,
धाड़, धाड़, धाड़. बेचारा तेंदुआ पटकी खाकर ज़मीन पर लुढ़क गया.
हरा कद्दू अब बूढ़ी औरत को पीटने लगा.



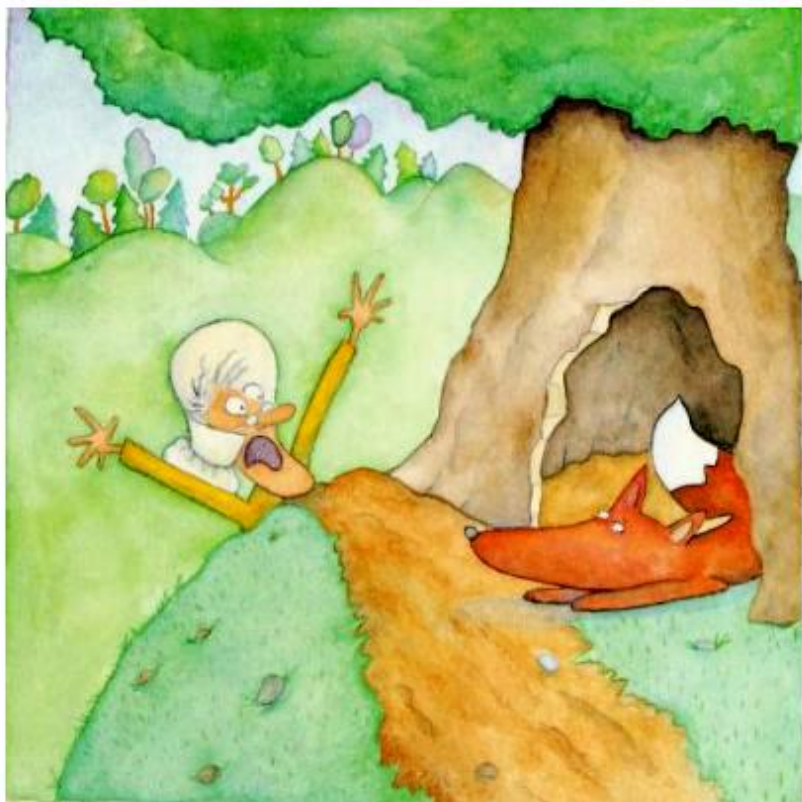
“दूर हटो,” बूढ़ी औरत चिल्लाई. पर हरा कदू उसे पीटता-धकेलता रहा.

वह वहां से भाग खड़ी हुई. हरा कदू भी हवा में उड़ता हुआ उसके पीछे लगा रहा. ऐसा लग रहा था जैसे मधुमक्खियाँ भिनभिना रहीं हों-हममममम

बूढ़ी औरत भी घबराहट में चिल्ला रही थी, यीईईईईईईई

वह भागती रही जब तक कि वह थक कर चूर न हो गई.





तभी वह लोमड़ी के घर के पास पहुँच गई. वह ऐसे चिल्ला रही थी कि जैसे कई तेंदुए उसका पीछा कर रहे हों.

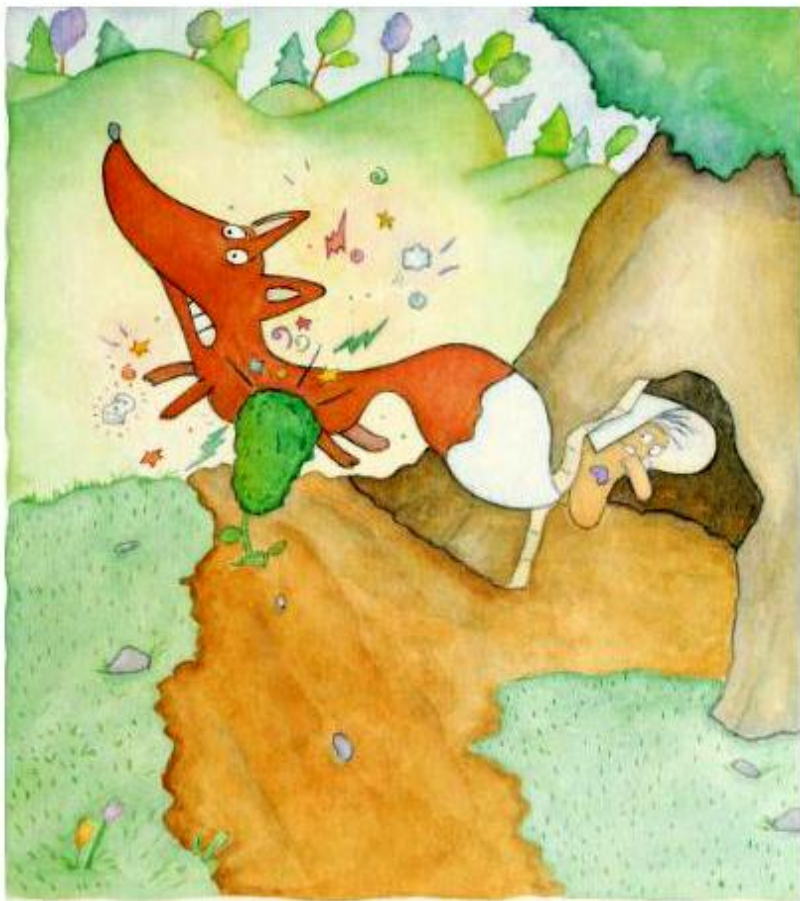
“क्या बात है? क्या हुआ?” लोमड़ी ने पूछा.

“एक उदंड हरा कद्दू मेरे पीछे पड़ा है, मुझे बार-बार पीट रहा है.”

“भीतर आ जाओ,” लोमड़ी बोली, “मैं उसकी धुनाई कर दूँगी.”



बेतहाशा भागती वह लोमड़ी के घर के अंदर आ गयी.
लेकिन हरा कद्दू भी पीछे आ धमका.



लोमड़ी उस पर झपटी लेकिन उसने घम कर लोमड़ी को जोर से एक ठोकर मारी. फिर वह बूढ़ी औरत की ओर आया.



“दूर हटो,” वह चिल्लाई और लोमड़ी के घर से भाग खड़ी हुई।
हरा कद्दू भी उसके पीछे-पीछे बाहर आ गया।

बूढ़ी औरत सड़क पर भाग रही थी। कद्दू भी उसके पीछे आ रहा था और उसकी पिटाई करने की पूरी कोशिश कर रहा था।



अपनी जान बचाने के लिए बूढ़ी औरत चीखती-चिल्लाती,
गिरती-पड़ती यहाँ-वहाँ भागती रही. वह एक लड़के के घर के पास पहुंची.

“यह सब क्या हो रहा है?” लड़के ने पूछा.

“बहुत कुछ हो रहा है. एक हरा कद्दू भूत की तरह मेरे पीछे पड़ा है और मेरी पिटाई कर रहा है.”

“अम्मा, आप अंदर आ जाओ. मैं उस हरे कद्दू को देख लूँगा,” लड़के ने बूढ़ी औरत से कहा.

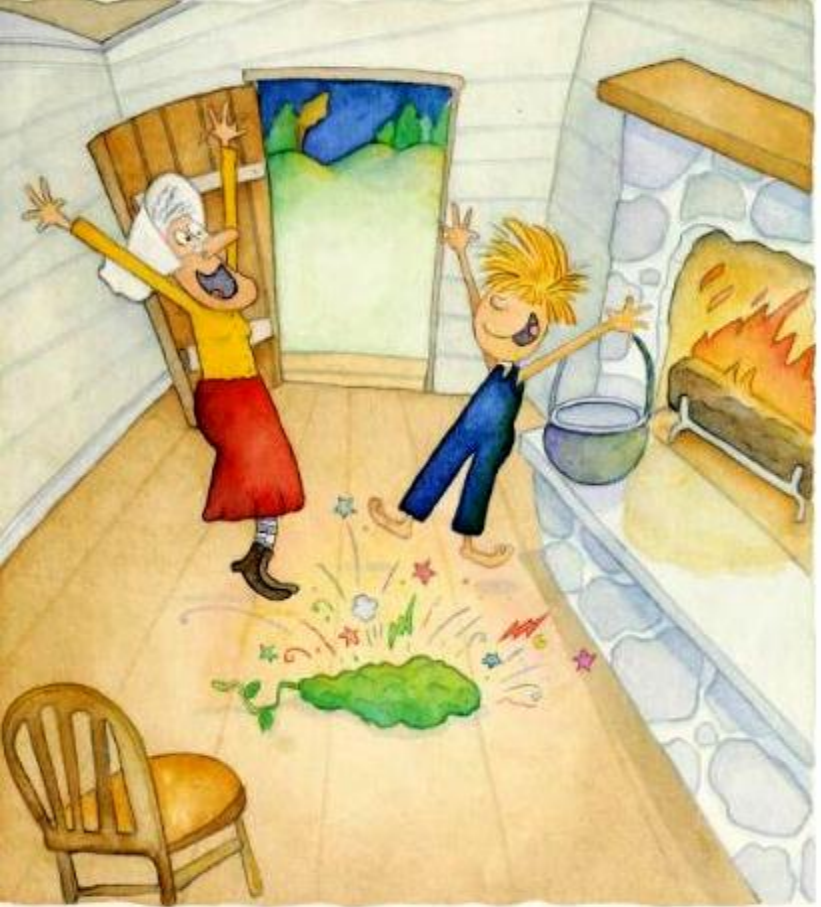




अब वह लड़का था तो छोटा पर था बहुत होशियार और फुर्तीला. वह दरवाज़े के पीछे छिप गया. हरे कद्दू ने दरवाज़े से अंदर झाँक कर देखा. बूढ़ी औरत की पिटाई करने के लिये वह तेज़ी से लुढ़कता हुआ अंदर आया. तभी लड़का दरवाज़े के पीछे से बाहर आया और चिल्लाया, “हरे कद्दू, मुझ से बच कर रहना.”



इतना कह कर वह कद्दू के ऊपर कूद गया और उसके ऊपर बैठ गया और उसे कुचल डाला.



दोनों ने खूब ज़ोर से ताली बजाई.



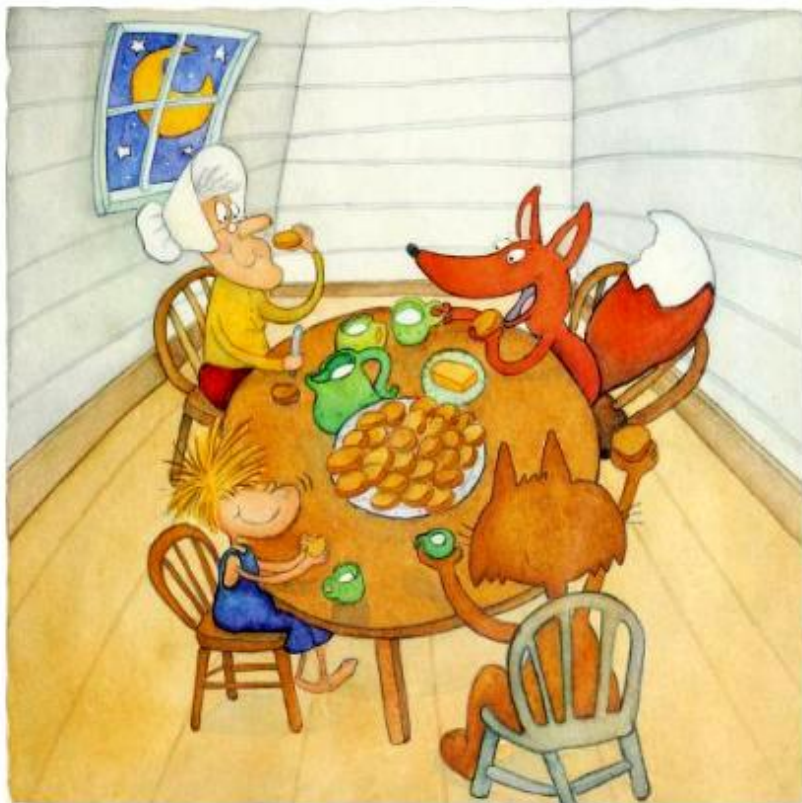
बूढ़ी औरत ने एक झाड़ू से कुचले हुए कद्दू के टुकड़े समेट कर अँगीठी में जलने के लिए डाल दिए.

उन टुकड़ों के जलने से ऐसी आतिशबाज़ी हुई जैसी वहाँ पर किसी ने न देखी थी; न कभी पहले, न कभी बाद में.

धूम-धड़ाके के साथ कद्दू के सारे टुकड़े जल गए. उसने एक डरावनी चीख मारी और हरे रंग के धुएं में सदा के लिए गायब हो गया.

“बच्चे, तुम ने उस हरे कद्दू का सही निपटारा किया।
अब मेरे साथ चलो, हम बढ़िया दावत करेंगे और खुशियाँ मनाएंगे।”

तेंदुआ और लोमड़ी भी बूढ़ी औरत के घर आ गए. उसने
सबको बिस्कुट दिए जिन पर घर में बना मक्खन लगा था. सब ने
खूब खाया, सब अपनी उंगलियाँ चाटते रह गए.





कद्दू-कलछा बनाने के लिए अब बूढ़ी औरत ने कोई कच्चा कद्दू न तोड़ा. उसने कद्दुओं के पकने का इंतज़ार किया. वह समझ गयी कि, 'कभी भी कद्दू को पकने से पहले मत तोड़ो, नहीं तो एक भूत की तरह वह कद्दू तुम्हारे पीछे पड़ जाएगा.'

